ब्रेकिंग न्यूज...

महिला ने किया आत्मदाह

इम्पेक्ट न्यूज. जगदलपुर

शहर के लालबाग इलाके में स्थित हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में रहने वाली एक महिला ने खुद को आग के हवाले कर आत्महत्या कर ली है। जिस दौरान महिला ने जब ऐसा कदम उठाया उस दौरान घर पर कोई नहीं था। विनोद बजाज के घर से सुबह लोगों ने धुंआ निकलते देखा। इसके बाद जब लोग घर पहुंचे तो देखा कि उनकी पत्नी सुनीता बजाज की जली लाश बाथरूम में पड़ी हुई है। बताया जा रहा है कि सुनीता की सेहत पिछले कुछ समय से खराब थी और वह परेशान थी हालांकि उसने ऐसा कदम क्यों उठाया इसका ठोस जवाब अभी नहीं मिल पाया है। इधर घर से धुंआ निकलता देख लोगों ने फायर ब्रिगेड को भी फोन कर दिया था। मौके पर कोतवाली पुलिस के अलावा फायर ब्रिगेड और 112 भी पहुंची थी।

बांग्ला समाज ने धूमधाम से मनाया नववर्ष

इम्पेक्ट न्यूज. जगदलपुर

शिल्पी सांस्कृतिक संस्था द्वारा बांग्ला नववर्ष पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। संस्था के सदस्यों सहित बांग्ला समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्था के सदस्यों ने नववर्ष पर गीत आदि का आयोजन कर नववर्ष धूमधाम से मनाया। संस्था के संरक्षक सुबीर नंदी ने बताया कि भाभा आईटी में संस्था के लोगों सहित समाज के लोगों ने बांग्ला संस्कृति को जीवित रखने के लिये विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महिला सदस्यों ने कोरस गीत प्रस्तुत किया साथ ही कविता पाठ, भाषण आदि में महिलाओं व बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

ओड़िशा का मक्का बस्तर में बेचकर हो रहे मालामाल दलाल

इम्पेक्ट न्यूज. जगदलपुर

बस्तर में धान खरीदी के साथ ही मक्का खरीदी भी नवंबर से शुरू की गई थी। धान की खरीदी तो समाप्त हो चुकी है, लेकिन 31 मई तक मक्का की खरीदी जारी रहेगी। इसका लाभ पड़ोसी राज्य में रहने वाले किसान और दलाल उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। धान की अपेक्षा में मक्का खरीदी पर प्रशासन कम सतर्कता बरतती है। इसका फायदा उठाकर सीमावर्ती राज्य ओड़िसा से सीमावर्ती संभाग के मक्का खरीदी केंद्रों में खपाया जाता है। विगत वर्ष भी मक्का खरीदी के मामले में अवैध परिवहन करते हुए स्थानीय किसानों ने पकड़ा था। मक्का का समर्थन मूल्य छत्तीसगढ़ में अधिक होने की वजह होना इसकी वजह है।

दुधमुंही बच्ची से दुष्कर्म का प्रयास, जेल

इम्पेक्ट न्यूज. जगदलपुर

शहर के बोधघाट थाना क्षेत्र के नयामुंडा निवासी ऑटो चालक पड़ोस में रहने वाली नाबालिग को बलात्कार करने के उद्देश्य से घर में घुसा था। इस मामले में आरोपी को विशेष न्यायाधीश ने 3 अलग-अलग धाराओं में 3 वर्ष का सश्रम कारावास की सजा सुनाई। लोक अभियोजक दिनेश पीग्राही ने बताया कि शहर के बोधघाट थाना क्षेत्र के नयामुंडा में रहने वाले ऑटो ड्राइवर 28 वर्षीं विजय साहू ने 17-18 मई 2017 की मध्य रात्रि लगभग डेढ़ बजे पड़ोस में रहने वाली नाबालिग के घर में घुसा। उसके बाद सो रही प्रार्थिया के साथ बलात्कार करने के लिए अश्लील हरकतें करने लगा। प्रार्थिया ने इसकी जानकारी घर वालों को बताई तो बोधघाट थाना में इसकी रिपोर्ट कराई गयी। विजय साहू को दोषी पाया। इसमें धारा 456 में आरोपी को 3 वर्ष का सश्रम कारावास, एक हजार का जुर्माना, धारा 354 में 3 वर्ष का सश्रम कारावास, एक हजार का जुर्मान और पॉक्सो में 3 वर्ष का सश्रम कारावास और 5 हजार रूपए का जुर्माना किया। तीनों सजाएं साथ-साथ चलेंगी।

बालीफूल वेलकम टू बस्तर में अश्लीलता को लेकर साहित्यकारों ने दर्ज कराया विरोध

स्तर की संस्कृति से छेड़छाड़ कर इसे बॉलीवुड की तर्ज पर नंगेपन की नुमाइश करने वाली निर्माणाधीन फिल्म बालीफूल वेलकम टू बस्तर का साहित्यकारों, मनीषियों ने विरोध किया है और फिल्म में बस्तर बालाओं के पहनावे के दूसरे ढंग से पेश किये जाने को लेकर रोष व्यक्त किया है। बस्तर के साहित्यिकारों ने इस संबंध में राज्यपाल को ज्ञापन देने की बात कही है।

दरअसल बालीफूल बस्तर में एक सम्मानजनक सम्बोधन है।

इम्पेक्ट न्यूज. जगदलपुर

युवक युवतियां आपस में बालीफूल बदते हैं और ताउम्र इसे निभाते हैं। यह एक पवित्र संबन्ध होता है जिसमें कोई कलुषित भावना नहीं होती, बालीफूल शब्द का प्रादुर्भाव ओड़िसा के बाली जगार से हुआ है जो लगातार 93 दिनों तक चलता है। जगार के कुछ अलग अलग रूप होते हैं। जगार पर शोध करने वाले बस्तर के साहित्यकार एवं बस्तर संस्कृति के जानकार हरिहर वैष्णव का कहना है कि फिलहाल इस फिल्म की जो थोड़ी बहुत पिक्चर देखने में आई है वह निंदनीय है। बालीफुल को लेकर फिल्म मेकर ये तर्क दे रहे हैं कि बालीफूल एक तरह का फूल होता है जो बस्तर में पाया जाता है जिसकी अनुकृति गुलाब जैसी होती है जो सर्वथा असत्य है। हरिहर ने कहा है कि वे कलेक्टर को प्रदेश के राज्यपाल के नाम से ज्ञापन देंगे और फिल्म पर परिबंध लगाने की मांग करेंगें। उन्होंने कहा की इस तरह बस्तरिया संस्कृति का विकृत और अधनंगा स्वरूप बाहर के लोगों में बस्तर की युवतियों के प्रति गलत सोच बनाएगी, उन्होंने इस फिल्म की दर्शाई गई वेशभूषा के बारे में कहा की बस्तर में इस तरह का पहनावा नहीं है और ना ही बस्तर में बनी फिल्मे या गानों में ऐसी अश्लील पहनावा कभी देखने को मिला, बता दे की रायपुर में बालीफूल वेलकम टू बस्तर फिल्म का निर्माण किया जा रहा है, रायपुर सहित बस्तर में फिल्म की सूटिंग होनी है जून के अंतिम सप्ताह में फिल्म के रिलीज होने की बात कही जा रही है। छत्तीसगढी बोली में बन रही फिल्म में बस्तर की बलाओं की रोल अदा कर रही कलाकारों द्वारा गानों में दर्शाई गई वेशभूषा का विरोध किया जा रहा है। बस्तर के साहित्यिकारों ने फिल्म में फूहड़ता और अश्लिलता परोशने का आरोप लगाया है। बस्तर की रीति रिवाजों को लेकर बस्तर पूरी दुनियां विख्यात है लेकिन कुछ अल्पज्ञानी एवं अधकचरा ज्ञान वालों ने इसका विकृत स्वरूप पेश करने में कभी गुरेज नहीं किया क्योंकि वे इसे भुनाने तक ही सीमित रहे। यह बस्तर के आदिवासी का ही जिगरा हो सकता है कि जिस ग्राम देवता के सामने हमेशा नतमस्तक रहता है, जिसकी इजाजत के बगैर वे एक पग नहीं रखते, उसी देवता को वे जनअदालत तक घसीट लाते हैं और उस पर आरोपों की झड़ी लगा उसके साबित होने पर उस पर प्रतिबंध लगाते हैं बल्कि गम्भीर आरोप के सिद्ध होने पर उस देवता की प्रतिमा को उसके साजो सामान सहित कूड़े में फेंकने का साहस भी रखते हैं। बस्तर संस्कृति के जानकार हरिहर वैष्णव का कहना है कि ऐसा ही एक घिनौना षड्यंत्र घोटुल प्रथा को लेकर 1980 के दौरान किया गया था, अंततः बस्तर की पहली सामाजिक पाठशाला घोटुल आज विलुप्त सी हो गई है, श्री हरिहर ने कहा की घोटुल परम्परा में एक गुड़ी यानी झोपड़ी गांव की बाहरी सीमा पर बनाई जाती थी, जहां रात में युवक युवतियां अपना वक्त विभिन्न खेलों से बिताते थे और यहीं आपस में मिलकर साथ साथ सोते भी थे। यहीं वे अपने जीवन साथी का चयन भी करते थे। लेकिन मजाल है कि किसी में भी वासना की भावना हो। विशुद्ध रूप से यहां संयम और विवाह पूर्व शारीरिक सम्बन्ध से पूरी तरह परहेज रख ब्रम्हचर्य का पालन करना प्रमुख उद्देश्य होता था, लेकिन एक मीडिया समूह की टीम ने यहां महीनों डेरा डाला, इस टीम में औरत मर्द दोनों थे। कहा जाता है कि इस टीम ने आदिवासी युवाओं से मधुर ताल्लुकात स्थापित किये और अपने ढंग से इस तरह फिल्मांकन किया कि घोटुल खुली सेक्स की जगह है। कहा जाता है कि रिपोटरों ने दो तरह की फिल्म बनाई। एक भारत सरकार को दिखाने के लिए और दूसरी ब्लू फिल्म के लिए। इसकी जानकारी जब लोकल मीडिया तक पहुंची तो बवाल मचा और आनन फानन में भारत सरकार ने अबूझमाड़ इलाके में बाहरी लोगों के प्रवेश और फिल्मांकन के साथ फोटोग्राफी करने पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसका दूरगामी दुष्परिणाम नक्सली समस्या के रूप में जन्मा जिसे आज बस्तर भुगत रहा है।

फिल्म से सबंधित कई तस्वीरें इन दिनों सोशल मीडिया में पोस्ट की जा रही है जिसे लेकर लोग तरह तरह के कमेंडट्स कर रहे है। बस्तर को नजदीक से जानने वाले लोग इसकी निंदा भी कर रहे है। दिनेश कुमार पांडये लिखते है सुन्दरतम बस्तर का ऐसा फूहड़ फिल्मांकन, इन सभी लोगों के विरुद्ध अपराध दर्ज होना चाहिए, सुधा वर्मा लिखती है की फोटो देखकर तो लग रहा है कि धरना किया जाये, एक लड़की इस तरह के कपड़े पहने, इतनी आर्ट फिल्में बनी पर किसी में भी ग्रामीण संस्कृति को इस तरह से नहीं बदला है। राकेश आर सिंह ने लिखा है बेहद ही शर्मनाक है कला की बात तो छोड़िये समाज के साथ खिलवाड़ है। फेसबुक पोस्ट पर लोकेश साहू का कहना है बस्तर ऐसा तो कहीं से नही दिखता बस्तर की छवि खराब करने की चेष्टा नही होनी चाहिये जो बस्तर को जानते ही नहीं वो फिल्म बनाने चले।

बस्तर की कला संस्कृति तो अनुकरणीय है। कलाकार वर्षा रावल ने लिखा है कि इस फिल्म के साथ ही वहाँ के फिल्मकारों का भी विरोध हो। उन्होंने आश्वासन भी दिया कि ये फिल्म इस तरह लगने नही देंगे दूसरी तस्वीर जो मुझ तक पहुंची वो देखने योग्य भी नहीहै। हमारे बस्तर के भोलेभाले लोगो की छवि को नुकसान पहुंचाने वालों का घोर विरोध होगा, सोशल मीडिया में और भी कई लोगों में मामले को गंभीरता से लेते कमेस्ट्स किये है। फिल्म के निर्माता अजय अग्रवाल का कहना है की फिल्म का उद्देश्य बस्तर की छवि खराब करने की नहीं है और ना ही बस्तर की युवतियों को ऐसे वेशभूषा में फिल्माया गया है। फिल्म का टाइटल बस्तर से और बस्तर की खूबसूरत वादियों दर्शया गया है। एक साफ-सुथरी फिल्म बन रही है। उन्होंने कहा कि बस्तर की संस्कृति और सामाजिक दायित्वों का फिल्म में खयाल रखा गया है फिल्म देखने पर ही इसकी सत्यता नजर आएगी, हमारा उदेश्य बस्तर की खूबसूरत वादियों, झरनों, जल प्रपातों को विश्व पटल में लाना है।

भूपेश सरकार का मजदूरों की समस्याओं से अब कोई सरोकार नहीं रह गयाः बाफना

अंतराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर ग्राम पंचायत नगरनार में छत्तीसगढ़ श्रमिक कल्याण संघ के कार्यक्रम में पूर्व विधायक संतोष बाफना ने कार्य म के दौरान उपस्थित मजदूरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ की पूर्ववर्ती डॉ. रमन सिंह जी की सरकार ने श्रमिक वर्ग की आर्थिक असुरक्षा दूर करने, इनके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, परिवार के स्वास्थ्य के लिए श्रम विभाग के अंतर्गत कई योजनाऐं शुरू की थी.

इम्पेक्ट न्यूज. जगदलपुर

इसके लिए रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी था लेकिन मजदूरी करने वाले बहुत से लोगों को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इसके लिए मैंने अपने कार्यालय में निःशुल्क च्वाईस सेंटर की स्थापना कर मजदूर वर्ग के लोगों का पंजीयन निःशुल्क हो सके, साथ ही उनका रजिस्ट्रेशन बिना किसी परेशानी के संभव हो, ऐसी सेवा भी मैंने जारी रखी थी, लेकिन मौजूदा सरकार ने श्रमिक पंजीकरण ही बंद करवा दिया, पूर्व भाजपा की सरकार के द्वारा श्रमिकों एवं उनके बच्चों को छात्रवृत्ति व अनेक प्रकार को जो सहूलियत मिल रही थी उस पर भी भूपेश सरकार ने पाबंदी लगा दी।

बाफना ने संगठित एवं असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के कल्याण के मामले में कॉंग्रेसी सरकार के रवैये की तीखी आलोचना करते हुए कहा इस कॉंग्रेसी सरकार से मजदूरों का कल्याण भी न देखा गया। पूववर्ती सरकार से मिली हुई मजदूरों की रियायतों को भी बंद करने पर तुली हुई है यह कॉंग्रेसी सरकार। अब बहुत हो गया। यह तो गरीबों का शोषण है। क्या प्रदेश की गरीब जनता के प्रति छत्तीसगढ़ कॉंग्रेस सरकार का यही रवैया होना चाहिए। प्रदेश की जनता ने बहुत ही उम्मीदों के साथ अपने कल्याण के लिये आपको चुना, परंतु इस सरकार ने जनता की उम्मीदों पर खरा उतरने की बजाय कल्याणकारी योजनाओं को बंद कर गरीब जनता को ही परेशान करना शुरू कर दिया। आखिर इस कॉंग्रेसी सरकार ने अपने चरितार्थ को सिद्ध ही कर दिया कि हमारी कॉंग्रेसी सरकार छत्तीसगढ़ प्रदेश की जनता को झूठ के पुलिंदे के सिवाय और कुछ नहीं दे पायेगी। उन्होंने कहा कि भूपेश सरकार मजदूरों वर्ग के साथ अन्य वर्ग के हित का कार्य तक नहीं कर रही है। आज हर वर्ग का मजदूर कॉंग्रेसी सरकार के ऐसे कृत्य से उत्पन्न हुई समस्याओं से जूझ रहा है। पूरानी सरकार द्वारा चलाये गई कल्याणकारी योजनाओं का शत् प्रतिशत लाभ तक नहीं पहुँच पा रहा है जनता तक। वर्तमान कॉंग्रेसी सरकार के ऐसे कार्यों से तो सिर्फ यही प्रतीत होता है कि अब इस भूपेश सरकार का मजदूरों की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं रह गया। सरकार के द्वारा लिये गये ऐसे फैसलों के बावजूद हमारा श्रमिक वर्ग बिना किसी भी प्रकार के आंदोलन किए बिना ऐसी विपरीत परिस्थितियों मे भी डटकर खड़ा हुआ है। ऐसे कर्मठ मजदूरों को भारतीय जनता पार्टी की ओर से मेरा नमन।

मोदी सरकार के भ्रष्टाचार के सबूत मिटाने शास्त्री भवन में आगजनी

इम्पेक्ट न्यूज. रायपुर

दिल्ली के शास्त्री भवन में लगी आग और महत्वपूर्ण फाईलों के जलने की घटना से यह साबित हो रहा है कि मोदी सरकार अपनी बिदाई की बेला में भ्रष्टाचार के सबूतों को नष्ट करने में जुट गयी है। प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता सुशील आनंद शुक्ला ने कहा है कि शास्त्री भवन जैसे महत्वपूर्ण और सुरक्षा की दृष्टि से अतिसंवेदनशील स्थान में आग लगना और आग में फाईलों के जखीरों का जलना सामान्य घटना नहीं है, यह गंभीर षड़यंत्रों की ओर साफईशारा करता है। भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार ने यह मान लिया है कि चार चरणों के चुनाव में देश की जनता ने उसके खिलाफ मतदान किया है। शेष बचे तीन चरणों के मतदाता भी मोदी सरकार के बिदाई के लिये मतदान करने वाले हैं इसीलिये घोटालों और गड़बड़ियों के सबूत नष्ट करने की कवायद शुरू हो गयी है। छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों में मतदान के बाद मतगणना के बीच की अवधि तक भाजपा के मंत्रियों के सरकारी बंगलों से बड़ी संख्या में फाईलों की अफरा तफरी की गयी थी तथा फाईलों को जलाया गया था। अब भाजपा की केन्द्र सरकार में बैठे हुये लोग भी यही काम कर रहे है।

छत्तीसगढ़ में फाईलों को जलाने के बावजूद भी भ्रष्टाचार के अनेको प्रकरण उजागर हुये है, उनकी जांच हो रही है, कार्यवाहियां भी शुरू हो गयी है। भ्रष्टाचारी भाजपा नेता और तत्कालीन सरकार के संरक्षण में भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारी भागे-भागे फिर रहे है। केन्द्र में भी भाजपा के नेता अपने भ्रष्टाचार के कितने भी सबूत मिटा लें, फाईले जलवा दें। दोषियों पर कार्यवाही जरूर होगी। देश की संपदा को लूटने वालों के खिलाफछत्तीसगढ़ के समान दिल्ली में कार्यवाही जरूर होगी।

छत्तीसगढ़ के पूर्व मंत्री विधायक बृजमोहन अग्रवाल के जन्मदिन के अवसर पर भाजयुमो प्रदेश महामंत्री संजू नारायण सिंह ठाकुर के नेतृत्व में बुढ़ेश्वर चौक स्थित बुढेश्वर मंदिर भगवान भोलेनाथ का पूजा अर्चना.

दुष्प्रचार के लिए माफी मांगें भूपेशः विक्रम उसेंडी

इम्पेक्ट न्यूज. रायपुर

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विक्रम उसेंडी ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल द्वारा राज्य में सीधी भर्ती पर रोक के संबंध में पेश की जा रही सफाई पर पलटवार करते हुए कहा है कि अब मुख्यमंत्री भूपेश बघेल रमन सरकार के समय से परिपत्र जारी होने का हवाला देकर कह रहे हैं की हमने आउटसोर्सिंग रोकने के लिए यह कदम उठाया है जबकि विपक्ष में रहते हुए चुनाव प्रचार के दौरान भूपेश बघेल और पूरी कांग्रेस भाजपा सरकार पर आउटसोर्सिंग का आरोप लगा रही थी। जब मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने यह स्वीकार कर लिया है कि वर्ष 2014 से वित्त विभाग यह परिपत्र जारी कर रहा है और उसी प्रक्रिया के तहत यह परिपत्र जारी किया गया है तो भूपेश बघेल विपक्ष में रहने के दौरान आउटसोर्सिंग का झूठा हल्ला क्यों मचाते थे? वह यह बताएं कि जब डॉ. रमन सिंह की सरकार के समय से जारी व्यवस्था को ही उनकी सरकार ने आगे बढ़ाया है तो इसकी वजह क्या है। उसेंडी ने कहा कि

भूपेश बघेल सरकार के पास ना तो कोई नीति है और ना ही छत्तीसगढ़ की जनता के हित तथा राज्य के विकास के लिए उनकी कोई नीयत है। बघेल हर मामले में रमन सरकार की नीतियों का अनुसरण कर रहे हैं और कहते हैं, कि हम भर्ती पर रोक नहीं लगा लगा रहे बल्कि आउटसोर्सिंग पर रोक लगा रहे हैं यह कमाल की बात है कि डॉ. रमन की सरकार ने यही काम किया तो उसे गलत ठहराया गया और उसी काम को करके भूपेश बघेल अपनी पीठ थपथपा रहे है। डॉ. रमन सिंह की सरकार ने 15 वर्षों में छत्तीसगढ़ का जो विकास किया है उसके बाद एक कदम भी इस दिशा में भूपेश सरकार ने नहीं उठाया है। और भाजपा की पूर्ववर्ती सरकार की नीतियों तथा कार्यक्रमों पर अपना ठप्पा लगाने की कोशिश कर रही है।

राजनीतिक विद्वेष की इससे बड़ी मिसाल और क्या होगी की जिस मामले में भूपेश बघेल और उनकी कांग्रेस भाजपा सरकार को बदनाम करती थी, उन्हीं का अनुसरण करके सफाई दे रही है कि उसने आउटसोर्सिंग रोकने के लिए परिपत्र जारी किया है इसका मतलब यह है कि भाजपा सरकार के समय से जारी प्रक्रिया आउटसोर्सिंग रोकने के लिए ही थी और भूपेश सरकार ने भाजपा सरकार की नीति को ही अंगीकार किया है। इसलिए भूपेश बघेल को पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनसे इस बात के लिए क्षमा मांगना चाहिए कि सिर्फ सत्ता में आने के लिए उन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता को झूठ बोलकर गुमराह किया और डॉ. रमन सिंह के जन हितैषी कार्यों का केवल राजनीतिक कारणों से विरोध करते रहे।

बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण भी जरूरी

इम्पेक्ट न्यूज. रायपुर

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) रायपुर के डायरेक्टर डॉ. नितिन मोहन नागरकर ने कहा कि स्कूलों में आप बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। किन्तु जीवन में पढ़ाई और खेलकूद ही सब कुछ नहीं है। अच्छी शिक्षा के साथ-साथ चरित्र निर्माण भी उतनी ही जरूरी है। संस्कारों को अच्छा बनाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता होती है। डॉ. नागरकर आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चौबे कालोनी में आयोजित समर कैम्प के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि चरित्र निर्माण की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान का समर कैम्प सबसे अच्छी जगह है। आप लोग जब बड़े होकर किसी जिम्मेदार पद पर कार्य करेंगे तब आप लोगों को यहाँ दी गई शिक्षाएं बहुत काम आएंगी। उन्होंने समर कैम्प में शामिल होकर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि अस्पताल में हम लोग इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि किसी से मिलने का समय ही नहीं मिल पाता है। इसीलिए यहाँ पर आकर और इतने सारे बच्चों से मिलकर बहुत अच्छा लग रहा है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी ने बच्चों को अपने आशीर्वचन में कहा कि हरेक माता-पिता की यह शुभ इच्छा होती है कि उनका बच्चा बड़ा होकर किसी उँचे पद पर आसीन हो और उनका नाम रौशन करे। इसलिए वह लोग बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए पूरा प्रयास भी करते हैं। किन्तु बच्चों के चारित्रिक एवं नैतिक उन्नति के लिए वह लोग पर्याप्त ध्यान नहीं देते। जिसके परिणामस्वरूप आध्यात्मिक शिक्षा से वंचित होने के कारण बच्चों का नैतिक उत्थान नहीं हो पाता है और उनका व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार छोटे पौधों का रोपण करना सहज होता है। उसी प्रकार बच्चों में अच्छे संस्कारों को रोपित करना आसान होता है। दुनिया में डॉक्टर और इन्जीनियर आदि में ईमानदारी और सच्चरित्रता के गुण आ जाएं तो उनका जीवन बहुतों के लिए सुखदायी बन सकता है। इसलिए आज ऐसे प्रयासों की जरूरत है कि जिसमें मुनष्य गुणवान बनने के लिए प्रेरित हो। इस अवसर पर बोलते हुए ब्रह्माकुमारी अदिति दीदी ने बतलाया कि यह समर कैम्प चौबे कालोनी रायपुर में विगत पन्द्रह वर्षों से निरन्तर आयोजित किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों का समावेश कर उनके व्यक्तित्व का विकास करना है। उन्होंने कहा कि सुन्दर हाथ वह है जो कि परिश्रम करे।

आपदा बचाव एवं राहत व्यवस्था के लिए एक जून से स्थापित किया जाएगा कंट्रोल रूम

इम्पेक्ट न्यूज. धमतरी

राजस्व एवं आपदा प्रबंधन छत्तीसगढ़ शासन द्वारा जिला एवं तहसील स्तर पर मानसून के दौरान वज्रपात, आकाशीय बिजली एवं आंधी-तूफान से होने वाले जनधन की हानि को यथा संभव रोकने के लिए बचाव एवं राहत व्यवस्था सुनिश्चित् करने के निर्देश दिए गए हैं। इसी तारतम्य में कलेक्टर श्री रजत बंसल ने बताया कि जिला एवं तहसील स्तर पर आगामी एक जून से कंट्रोल रूम स्थापित कर वहां अधिकारी एवं कर्मचारियों की 24 घंटे की ड्यूटी लगाई जाएगी, जो वज्रपात, आकाशीय बिजली, आंधी-तूफान जैसे प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी तत्काल उपलब्ध कराएंगे। इसके अलावा जिले के शासकीय एवं अशासकीय बहुमंजिला इमारतों में तड़ित चालक स्थापित किए जाएंगे। साथ ही जिला एवं तहसील स्तर पर चिकित्सा दल गठित किया जाएगा और वज्रपात एवं आकाशीय बिजली से बचाव के संबंध में आम जनता को जागरूक करने, पोस्टर-पाम्पलेट, समाचार पत्र एवं सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए गए हैं। वज्रपात, आकाशीय बिजली एवं आंधी तूफान से होने वाली क्षति की जानकारी निर्धारित प्रपत्र में राहत आयुक्त कार्यालय रायपुर को भी प्रतिदिन ई-मेल एवं फैक्स के जरिए प्रेषित किए जाने के भी निर्देश राजस्व विभाग के अधिकारियों को दिए गए हैं।